

व्यवहार मनोविज्ञान पुं. (तत्.) मनोविज्ञान की एक शाखा जो 'व्यवहारवाद' को अपना सिद्धांत मानती है।

व्यवहारवाद पुं. (तत्.) मनो. मनोविज्ञान का एक संप्रदाय जिसमें मनोविज्ञान को 'व्यवहार का विज्ञान' मानकर मनोविज्ञान को उद्दीपनों और प्रतिक्रियाओं के अध्ययन तक ही सीमित माना जाता है।

व्यवहारविधि स्त्री. (तत्.) व्यवहार का ढंग, धर्मशास्त्र।

व्यवहाराश्रयी कामदी स्त्री. (तत्.) आदर्श आचरण और सामाजिक जीवन की आवश्यकताओं का समन्वय दिखाने वाली कामदी।

व्यवहारिक वि. (तत्.) 1. व्यवहार संबंधी, प्रायोगिक, व्यवहार्य, क्रियात्मक 2. व्यापार संबंधी, व्यापार में लगा हुआ।

व्यवहारी वि. (तत्.) 1. रीति, रस्म, प्रथा, नियमों के अनुसार आचरण करने वाला 2. लेन-देन का कारोबार करने वाला, महाजन 3. जो व्यवहार, उपभोग, प्रयोग में आता हो 4. मुकदमा करने वाला (प्राचीन प्रयोग)।

व्यवहार्य वि. (तत्.) 1. व्यवहार में आने योग्य, करने योग्य, जिसे क्रियात्मक रूप दिया जा सके 2. जिस पर कोई व्यवहार या विधिक कार्रवाई की जा सकती हो।

व्यवहित वि. (तत्.) 1. पृथक किया गया, अलग रखा हुआ 2. बीच की किसी वस्तु से पृथक किया गया 3. पर्दा, आड़ से बाधित, अवरुद्ध, दृष्टि से ओझल 4. जिसका निरंतर संबंध न हो 6. परित्यक्त, भूला हुआ, छोड़ा हुआ 7. नीचा दिखाया हुआ 8. दूरवर्ती, दूरस्थ।

व्यवहृत वि. (तत्.) 1. प्रयोग या व्यवहार में लाया गया 2. आचरण में लाया गया 3. कार्यान्वित, लागू किया गया।

व्यवायी वि. (तत्.) 1. शीघ्र फैलने वाला, व्यापक पुं. 2. कामी/विलासी व्यक्ति 3. कामोद्दीपक पदार्थ।

व्यष्टि स्त्री. (तत्.) अकेला व्यक्ति, जो समष्टि न हो परंतु समष्टि का अंग हो, वैयक्तिकता, एकाकीपन (वेदांत) समष्टि को उसके अलग अलग अंशों के रूप में देखना।

व्यष्टिगत वि. (तत्.) जो व्यष्टि, व्यक्ति से संबंधित हो, न कि समष्टि से।

व्यष्टिवाद पुं. (तत्.) 1. सामाजिक हित की तुलना में व्यक्ति के हित को प्राथमिकता देने का एक मतवाद 2. उक्त प्राथमिकता देने की क्रिया।

व्यसन पुं. (तत्.) 1. बुरी आदत, लत, कुटेव, पतन 2. विषयासक्ति 3. किसी विषय या कार्य में तीव्र रुचि या उसमें शौक, किसी वस्तु या कार्य का आदी हो जाना 4. कोई बुरी या अमांगलिक बात, अनिष्ट 5. अयोग्यता, अक्षमता।

व्यसनी वि. (तत्.) 1. जिसे किसी बुरे कार्य या वस्तु की लत पड़ गई हो, किसी व्यसन में फंसा हुआ 2. मादक वस्तुओं का अधिक मात्रा में निरंतर सेवन करने का अभ्यस्त 3. विषय भोग में आसक्ति वाला, दुश्चरित्र 4. किसी कार्य में हमेशा संलग्न रहने वाला।

व्यस्त वि. (तत्.) 1. किसी कार्य में पूर्णतः संलग्न 2. किसी काम में उलझा हुआ, जिसे अपने कार्य से फुर्सत न हो 3. पृथक, अलग 4. अंतः प्रसारित, व्याप्त 5. बिखरा हुआ, व्या. जो समास युक्त न हो, समासरहित।

व्याकरण पुं. (तत्.) 1. छः वेदांगों में से एक शास्त्र जिसमें शब्दों, भाषा के स्वरूप, क्रियाओं, संधि, समास, विग्रह आदि का अध्ययन किया जाता है 2. अलग-अलग करने की प्रक्रिया 3. व्याकरण शास्त्र से संबंधित पुस्तक।

व्याकुल वि. (तत्.) 1. विकल, व्यग्र, घबराया हुआ, अधीर, बेचैन, परेशान, विक्षुब्ध, हतबुद्धि 2. भयभीत, डरा हुआ 3. उत्सुक, उत्कंठित, आतुर।